देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

Impact Factor
7.523

ISSN : 2395-7115
नवम्बर 2024
Vol.-20, Issue-5(1)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

वैश्वीकरण के दौर में बदलती सामाजिक व्यवस्था

Guru Nanak Girls College
Sant Pura, Yamuna Nagar

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. गीतू खन्ना,
डॉ. अमनदीप कौर

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग
एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

अनुक्रमाणिका – नवम्बर 2024

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. गीतू खन्ना, डॉ. अमनदीप कौर	11–11
2.	शुभकामना संदेश		12–15
3.	हिन्दी साहित्य में नारी चित्रण	डॉ. गीतू खन्ना	16–22
4.	वैश्वीकरण के दौर में भारतीय शिक्षा संस्कृति और साहित्य	डॉ. शक्ति बुद्धिराजा	23–27
5.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित परिवर्तित होता पारिवारिक ढांचा	डॉ. अंजू बाला	28–35
6.	वैश्वीकरण का अवधारणात्मक विकास व महिला सशक्तिकरण	संदीप कौर	36–39
7.	वैश्वीकरण के दौर में विखंडित होते जीवन और मानवीय मूल्य : हिन्दी उपन्यासों के सन्दर्भ में	डॉ. अमनदीप कौर	40–45
8.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था	मिस दीपमाला	46–50
9.	वैश्वीकरणसमये वेदनिहितसामाजिकसिद्धान्तविचारः	अजित कुमार नायक	51–54
10.	साहित्य में वैश्वीकरण का प्रभाव : शरद जोशी और रवींद्रनाथ त्यागी के व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण का विश्लेषण	अर्चना बारस्कर	55–60
11.	वैश्वीकरण के दौर में विखण्डित होते जीवन मूल्य 'गिलिगडु' उपन्यास के संदर्भ में	बीना मीणा	61–64
12.	वैश्वीकरण के दौर में दिविक रमेश के बाल कथा साहित्य में चित्रित बाल समस्याएं	दीपिका चौहान, डॉ. रीता सिंह	65–69
13.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था	धीरेंद्र प्रताप सिंह गौर	70–76
14.	The Impact of Technology on Mental Health of Young Adults : A Systematic Review	Ms. Divya Rathi, Dr. Nirupma Saini, Dr. Vandana Singh	77-84
15.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था	डॉ आदित्य प्रकाश	85–89
16.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था	डॉ. अमिता रेढू	90–97
17.	भूमण्डलीकरण और हिन्दी भाषा	डॉ० चन्द्रा खत्री, डॉ० आशा हर्बोला	98–100

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Nov. 2024 Page No. : 28-35
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित परिवर्तित होता पारिवारिक ढांचा

डॉ. अंजु बाला
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, संतपुरा, यमुनानगर।

प्रस्तावना :–

साहित्य समाज का दर्पण होता है, जो समय के साथ बदलते सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को अपने भीतर समाहित करता है। 20वीं सदी के उत्तरार्ध से वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने समाज के हर हिस्से को प्रभावित किया है, और इसके परिणामस्वरूप पारिवारिक ढांचा भी काफी बदल गया है। पारंपरिक संयुक्त परिवार जो कभी भारतीय समाज का आधार हुआ करता था, अब एकल परिवारों में बदलने लगा है, और परिवार के सदस्यों के बीच संबंधों का स्वरूप भी नए रूप में उभर रहा है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य वैश्वीकरण के कारण परिवार के ढांचे में आए परिवर्तनों का साहित्य में चित्रण करना है। कैसे वैश्वीकरण ने न केवल आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भों को बदला, बल्कि पारिवारिक मूल्यों और संरचनाओं पर भी गहरा प्रभाव डाला। साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से इस बदलते परिदृश्य का विश्लेषण करना और यह समझने का प्रयास करना कि कैसे पारिवारिक संबंधों, भूमिकाओं, और अपेक्षाओं में बदलाव आया है, इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

बीज शब्द :– पारंपरिक, एकल, संयुक्त, पारिवारिक, नयी पीढ़ी, आधुनिक जीवन शैली।

वैश्वीकरण का सामान्य अर्थ विभिन्न देशों, संस्कृतियों और समाजों के बीच परस्पर जुड़ाव और अंतरसंबंधों से है। यह प्रक्रिया मुख्य रूप से आर्थिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक पहलुओं के साथ–साथ तकनीकी विकास के कारण संभव हुई। वैश्वीकरण ने न केवल व्यापार और संचार को बढ़ावा दिया, बल्कि यह व्यक्तियों और समाज के बीच की परंपरागत सीमाओं को भी धुंधला कर दिया।

पारंपरिक पारिवारिक ढांचा :–

वैश्वीकरण से पहले, भारतीय समाज में पारिवारिक ढांचा एक महत्वपूर्ण इकाई के रूप में देखा जाता था। संयुक्त परिवार की अवधारणा सदियों से भारतीय समाज की नींव रही है। इस पारिवारिक ढांचे में एक ही घर में कई पीढ़ियाँ एक साथ रहती थीं, और पारिवारिक जिम्मेदारियों का बंटवारा आपसी समझ और संबंधों के आधार पर होता था। इसमें बुजुर्गों का विशेष सम्मान होता था, और वे परिवार के मार्गदर्शक के रूप में माने जाते थे।

परंपरागत भारतीय समाज में परिवार का ढांचा सामान्यतः संयुक्त परिवार के रूप में था, जिसमें माता—पिता, दादा—दादी, चाचा—चाची, और बच्चे एक साथ रहते थे। भारतीय साहित्य में इस प्रकार के पारिवारिक ढांचे का चित्रण प्रमुख रूप से मिलता है। साहित्यकारों ने इसे अपने लेखन में आदर्शवादी और मूल्यनिष्ठ संरचना के रूप में प्रस्तुत किया है। पारिवारिक संबंधों का यह ढांचा केवल खून के रिश्तों तक सीमित नहीं था, बल्कि सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा का भी माध्यम था। कृषि आधारित समाज में परिवार के सदस्य एक—दूसरे की मदद करते थे और एक सामूहिक इकाई के रूप में कार्य करते थे। इस तरह से परिवार सामाजिक, भावनात्मक, और आर्थिक सुरक्षा का प्रतीक था।

वैश्वीकरण के बाद पारिवारिक ढांचे में बदलाव :–

वैश्वीकरण ने भारतीय समाज के इस पारंपरिक ढांचे को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, और आधुनिक शिक्षा के प्रसार के साथ—साथ नए रोजगार के अवसरों के कारण लोग अपने मूल स्थानों से अलग होकर शहरों और महानगरों में बसने लगे। इस प्रक्रिया ने संयुक्त परिवारों को धीरे—धीरे एकल परिवारों में बदल दिया।

इस बदलाव के साथ पारिवारिक संबंधों में भी एक बड़ा परिवर्तन आया। पहले जहाँ परिवार एक सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा का स्रोत था, अब व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता पर अधिक जोर दिया जाने लगा। लोग अपने व्यक्तिगत जीवन लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने लगे, जिससे पारंपरिक पारिवारिक संबंधों का ढांचा कमजोर होने लगा।

साहित्य में यह बदलाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। उपन्यास, कहानियाँ और नाटक अब व्यक्तिगत संघर्ष, अकेलापन, और आत्मनिर्भरता की दिशा में बढ़ते संबंधों को चित्रित करने लगे हैं।

पारिवारिक ढांचे में आए बदलावों का साहित्यिक चित्रण :–

साहित्य ने हमेशा समाज के परिवर्तनों को अपने भीतर समाहित किया है, और वैश्वीकरण के बाद के सामाजिक बदलावों को भी साहित्य में बखूबी चित्रित किया गया है। इस संदर्भ में परिवारों के बदलते ढांचे का भी साहित्य में प्रमुखता से उल्लेख किया गया है। अब हम विभिन्न साहित्यिक कृतियों में पारिवारिक ढांचे में आए परिवर्तनों का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

एकल परिवारों का उदय और साहित्य में इसका चित्रण :–

वैश्वीकरण के आने से यह पारंपरिक ढांचा बदलने लगा। व्यापार, उद्योग, और शहरीकरण के प्रसार के कारण लोग अपने पैतृक गांवों को छोड़कर शहरों की ओर पलायन करने लगे। इसके परिणामस्वरूप संयुक्त परिवार का विघटन होने लगा और एकल परिवार की अवधारणा का उदय हुआ। इस बदलाव का साहित्य में व्यापक चित्रण हुआ है, जिसमें परिवार के विघटन और व्यक्तिगत संबंधों में आई दूरियों को प्रस्तुत किया गया है।

वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप एकल परिवारों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। संयुक्त परिवारों के विघटन का सबसे बड़ा कारण रोजगार के लिए शहरों की ओर पलायन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की इच्छा है। एकल परिवार न केवल एक आधुनिक जीवनशैली का प्रतीक बन गए हैं, बल्कि वे सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन के भी सूचक हैं।

साहित्य में एकल परिवारों के उदय और उसके कारण उत्पन्न हुए अकेलेपन, तनाव, और आत्मनिर्भरता

को प्रमुखता से स्थान दिया गया है। ऐसे साहित्यिक पात्र, जो एकल परिवारों में रहते हैं, अक्सर अपने व्यक्तिगत संघर्षों और समाज से दूरी का सामना करते हुए दिखाई देते हैं।

उदाहरण : भीष्म साहनी, कमलेश्वर, और मन्नू भंडारी जैसे लेखकों ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में एकल परिवारों के संघर्ष और अकेलेपन का मार्मिक चित्रण किया है। 'तमस' और 'महाभोज' जैसे उपन्यासों में पारिवारिक ढांचे के विघटन के कारण उत्पन्न सामाजिक अस्थिरता और पारिवारिक संबंधों में आई दरार को गहराई से उभारा गया है।

पारिवारिक संबंधों में दूरी और मानसिक तनाव :–

वैश्वीकरण ने भौतिक रूप से लोगों को एक–दूसरे से दूर कर दिया है, लेकिन इसका मानसिक प्रभाव भी गहरा है। पारिवारिक ढांचे के टूटने और एकल परिवारों के उदय ने परिवार के सदस्यों के बीच भावनात्मक दूरी को बढ़ा दिया है। यह दूरी न केवल शारीरिक रूप से है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी स्पष्ट दिखाई देती है।

साहित्य में यह भावनात्मक दूरी और तनाव अक्सर पात्रों के संवाद और आंतरिक द्वंद्व के रूप में उभरकर आता है। न केवल पति–पत्नी के बीच, बल्कि माता–पिता और बच्चों के बीच भी इस दूरी को दर्शाया गया है।

उदाहरण : कृष्णा सोबती के उपन्यासों में पारिवारिक संबंधों में आई दरार और भावनात्मक दूरी को गहराई से दर्शाया गया है। उनके उपन्यास षजिंदगीनामाष में पीढ़ियों के बीच का अंतर और पारिवारिक संबंधों में आई टूटन को बड़े ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया है।

वृद्धजनों की स्थिति और साहित्य में उनका स्थान :–

वैश्वीकरण और एकल परिवारों की प्रवृत्ति के साथ वृद्धजनों की स्थिति में भी बड़ा परिवर्तन हुआ है। पहले जहां वृद्धजन परिवार के अभिन्न अंग होते थे, वे परिवार के मुख्य मार्गदर्शक और निर्णयकर्ता होते थे, वहीं अब उन्हें अक्सर अनदेखा किया जाता है या वृद्धाश्रमों में भेज दिया जाता है।

साहित्य में बुजुर्गों की इस नई भूमिका और उनके अकेलेपन को बहुत प्रभावी ढंग से चित्रित किया गया है। यह एक सामाजिक समस्या के रूप में उभरती है, जहाँ बुजुर्ग अपनी पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर आकर एक नई पहचान की तलाश में होते हैं।

कई साहित्यिक रचनाओं में वृद्धजनों की उपेक्षा, उनके अकेलेपन, और परिवार के भीतर उनकी महत्वहीनता का चित्रण देखने को मिलता है। यह नई सामाजिक वास्तविकता पारिवारिक ढांचे के टूटने और पारंपरिक मूल्यों के क्षरण का प्रतीक है।

– साहित्यकारों ने इसे सामाजिक और भावनात्मक संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया है, जिसमें वृद्धजन अपने अस्तित्व की खोज और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

मन्नू भंडारी के उपन्यास 'आपका बंटी' में बुजुर्गों की भूमिका और पारिवारिक संबंधों में उनकी नई स्थिति को चित्रित किया गया है। इसमें पारिवारिक टूटन और बच्चों के साथ माता–पिता के संबंधों को बड़ी गहराई से दिखाया गया है।

वैश्वीकरण के दौर में महिलाओं की भूमिका और स्वतंत्रता का चित्रण :–

वैश्वीकरण का एक बड़ा प्रभाव महिलाओं की भूमिका और उनके जीवन पर पड़ा है। पहले महिलाएँ मुख्य

रूप से परिवार की देखभाल और घरेलू कार्यों तक सीमित थीं, लेकिन वैश्वीकरण के कारण महिलाओं की भूमिका में व्यापक परिवर्तन आए हैं। वे अब अपने करियर, शिक्षा, और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की ओर बढ़ने लगी हैं।

साहित्य में इस बदलाव को विशेष रूप से स्थान दिया गया है। महिला पात्र अब केवल परिवार की देखभाल करने वाली नहीं हैं, बल्कि वे अपने व्यक्तिगत संघर्षों, इच्छाओं और आकांक्षाओं के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना करती दिखाई देती हैं।

महिलाओं की स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता :–

वैश्वीकरण ने महिलाओं को शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता के नए अवसर प्रदान किए हैं। इसके परिणाम स्वरूप, महिलाएँ अब अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय स्वयं लेने लगी हैं। उनका आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ना और सामाजिक व व्यक्तिगत सीमाओं को तोड़ने का संघर्ष साहित्य में प्रमुख विषय के रूप में उभरकर आया है।

उदाहरण : मृदुला गर्ग और इस्मत चुगताई जैसे लेखकों ने अपने लेखन में महिलाओं की स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता को बड़े ही सशक्त ढंग से चित्रित किया है। मृदुला गर्ग के उपन्यासों में महिला पात्र अपने जीवन के संघर्षों का सामना करते हुए आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ती दिखाई देती हैं।

पारंपरिक विवाह और रिश्तों का बदलता स्वरूप :–

वैश्वीकरण के कारण न केवल पारिवारिक ढाँचे में बदलाव आया है, बल्कि विवाह और रिश्तों की परिभाषा भी बदल गई है। विवाह अब केवल एक सामाजिक बंधन नहीं रह गया, बल्कि इसमें व्यक्तिगत पसंद, स्वतंत्रता और समानता का महत्वपूर्ण स्थान हो गया है।

साहित्य में विवाह के इस नए स्वरूप का भी गहराई से चित्रण किया गया है, जहाँ पात्र पारंपरिक सामाजिक बंधनों से निकलकर अपने रिश्तों को नए सिरे से परिभाषित करते हैं।

विवाह संस्था में बदलाव :–

वैश्वीकरण ने विवाह संस्था को भी प्रभावित किया है। पहले जहां विवाह समाज और परिवार की दृष्टि से एक अनिवार्य सामाजिक बंधन था, वहीं अब इसे व्यक्तिगत पसंद और स्वतंत्रता का मामला माना जाता है।

साहित्य में चित्रण : विवाह से जुड़ी सामाजिक धारणाओं में आए इस बदलाव को साहित्य में व्यापक रूप से देखा गया है। साहित्य में अब विवाह केवल सामाजिक व्यवस्था के रूप में नहीं, बल्कि व्यक्तिगत स्वायत्तता और स्वतंत्रता के आधार पर देखा जाता है।

लिव–इन रिलेशनशिप्स और वैकल्पिक परिवार संरचनाएं भी साहित्य में नए विषय के रूप में उभरी हैं। कई लेखकों ने इन नए संबंधों को पारंपरिक विवाह व्यवस्था के खिलाफ एक प्रतिक्रिया के रूप में देखा है, जहां व्यक्तियों की स्वतंत्रता और इच्छाओं को प्राथमिकता दी गई है।

उदाहरण : मृदुला गर्ग की रचनाओं में पारंपरिक विवाह की सीमाओं से बाहर निकलकर महिलाओं के संघर्ष और उनके जीवन के नए आयामों का चित्रण मिलता है।

नई पीढ़ी के संघर्ष और साहित्य में चित्रण :–

वैश्वीकरण ने नई पीढ़ी के जीवन को भी गहरे रूप से प्रभावित किया है। शिक्षा और रोजगार के अवसरों के साथ–साथ तकनीकी प्रगति ने युवाओं के लिए नए अवसर तो पैदा किए हैं, लेकिन इसके साथ ही पारिवारिक संरचना में उनका स्थान बदल गया है।

साहित्य में यह संघर्ष विशेष रूप से उभरकर आया है, जहाँ नई पीढ़ी के पात्र पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक जीवनशैली के बीच संघर्ष करते हुए दिखाई देते हैं।

पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक जीवनशैली का द्वंद्व :–

नई पीढ़ी के पात्र अक्सर पारंपरिक परिवारिक मूल्यों और आधुनिक जीवनशैली के बीच फँसे हुए दिखते हैं। यह द्वंद्व उन्हें मानसिक रूप से परेशान करता है, और इस संघर्ष को साहित्य में विशेष स्थान दिया गया है।

उदाहरण : चेतन भगत की रचनाओं में युवा पात्र अपने जीवन में पारंपरिक परिवारिक अपेक्षाओं और आधुनिक जीवन शैली के बीच संघर्ष करते हुए दिखाई देते हैं। 'टू स्टेट्स' जैसे उपन्यास में इस द्वंद्व को गहराई से चित्रित किया गया है, जहाँ परिवार की अपेक्षाएँ और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच टकराव को दर्शाया गया है।

उपभोक्तावाद और परिवार पर इसका प्रभाव :–

उपभोक्तावाद (Consumerism) : वैश्वीकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू है जिसने परिवार के मूल्यों और ढांचे को बदल दिया है। साहित्य में यह दिखाया गया है कि कैसे उपभोक्तावादी संस्कृति ने परिवारों के बीच संबंधों को प्रभावित किया है। पहले जहां परिवार के सदस्य एक–दूसरे के साथ समय बिताते थे, वहीं अब अधिक से अधिक समय आर्थिक गतिविधियों और उपभोग पर केंद्रित हो गया है।

उपभोक्तावादी मानसिकता : परिवार के भीतर व्यक्तिगत इच्छाओं को अधिक महत्व देती है, जिससे पारंपरिक मूल्य कमजोर होते जा रहे हैं। साहित्यकारों ने इस प्रवृत्ति को गंभीर सामाजिक समस्या के रूप में देखा है, जिसमें परिवारों के बीच भावनात्मक और नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है।

साहित्य में इन बदलावों का चित्रण समाज के बदलते मूल्यों और विचारधाराओं को समझने का एक महत्वपूर्ण साधन है। साहित्यकारों ने पारिवारिक ढांचे में आई इन दरारों, रिश्तों में बढ़ती दूरी, महिलाओं की स्वतंत्रता और नई पीढ़ी के संघर्ष को अपने लेखन में जीवंत रूप से प्रस्तुत किया है।

परिवार में बदलती भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ :–

वैश्वीकरण ने परिवार के सदस्यों की भूमिकाओं को भी परिवर्तित किया है। पहले जहां पुरुष मुख्य रूप से परिवार का पालन–पोषण करते थे, वहीं अब महिलाओं की भी आर्थिक जिम्मेदारियों में सहभागिता बढ़ी है। साहित्य में महिलाओं की इस भूमिका परिवर्तन का चित्रण स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है।

इसके अतिरिक्त, बच्चों की भूमिका और उनके प्रति अपेक्षाएँ भी बदली हैं। पहले जहां बच्चों को पारंपरिक मूल्यों के साथ पाला जाता था, अब उनके लिए शिक्षा, कैरियर और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अधिक महत्व दिया जाता है। कई साहित्यिक रचनाओं में यह द्वंद्व देखने को मिलता है, जहां पारंपरिक मूल्यों और आधुनिकता के बीच परिवारों में संघर्ष को दर्शाया गया है।

साहित्य में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ :–

वैश्वीकरण के प्रभाव से साहित्य में परिवार के भीतर उभरती समस्याओं का चित्रण भी प्रमुख रूप से हुआ है। इसके अंतर्गत प्रमुख रूप से देखा गया है कि पारिवारिक संबंधों में दरारें और दूरी उत्पन्न हुई हैं। बदलते सामाजिक और आर्थिक परिवेश में पारिवारिक तनाव, अलगाव, तलाक, और मानसिक तनाव जैसी समस्याओं को साहित्य में स्थान मिला है।

रचनाकारों ने इन समस्याओं को न केवल व्यक्ति विशेष की कहानी के रूप में प्रस्तुत किया है, बल्कि

इसे वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप सामाजिक परिवर्तनों के रूप में देखा है। उदाहरण के लिए, आधुनिक उपन्यासों में पारिवारिक बिखराव, व्यक्तिगत स्वतंत्रता की तलाश, और पीढ़ियों के बीच मतभेदों का गहरा चित्रण मिलता है।

पीढ़ियों के बीच तनाव (Generation Gap) :–

वैश्वीकरण ने पीढ़ियों के बीच मतभेदों को और अधिक गहरा कर दिया है। जहां एक ओर युवा पीढ़ी वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के साथ अधिक लचीली और स्वतंत्र होती जा रही है, वहीं बुजुर्ग पीढ़ी पारंपरिक मूल्यों और रीति–रिवाजों से जुड़ी हुई है।

साहित्यकारों ने इस तनाव को गहरे भावनात्मक और सामाजिक मुद्दों के रूप में चित्रित किया है। कहानियों में बुजुर्गों और युवाओं के बीच वैचारिक मतभेद, संघर्ष, और समझ के अभाव को प्रमुखता से दिखाया गया है।

यह मतभेद केवल सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता, जीवन लक्ष्य, विवाह, और जीवनशैली के चुनावों में भी परिलक्षित होता है।

वैश्वीकरण और बच्चों का मानसिक विकास :–

वैश्वीकरण ने बच्चों के मानसिक विकास को भी प्रभावित किया है। परिवार की पारंपरिक संरचना में बच्चों का लालन–पालन एक संगठित और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध वातावरण में होता था, जबकि अब एकल परिवारों में बच्चों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता और शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

साहित्य में चित्रण : आधुनिक साहित्य में बच्चों के मानसिक विकास, उनके परवरिश के बदलते तरीके, और सामाजिक दबावों को दर्शाया गया है। यह बदलाव कई बार उनके मानसिक तनाव, अकेलेपन, और सामाजिक अस्थिरता का कारण भी बनता है।

– बच्चों की नई पीढ़ी को वैश्वीकरण के प्रभाव से बदलते मूल्यों, आर्थिक दबावों, और तकनीकी साधनों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश में संघर्ष करते हुए भी दिखाया गया है।

प्रवासी परिवार और सांस्कृतिक संघर्ष :–

वैश्वीकरण के दौर में प्रवास की प्रक्रिया भी बहुत तेजी से बढ़ी है। लोग बेहतर रोजगार, शिक्षा, और जीवन की तलाश में देश और विदेश में पलायन करने लगे हैं। साहित्य में प्रवासी जीवन और उनके पारिवारिक ढांचे में आने वाले बदलावों का चित्रण भी प्रचुर मात्रा में हुआ है। प्रवास के कारण परिवारों में सांस्कृतिक संघर्ष, पहचान का संकट, और मूल्यों में परिवर्तन जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसे साहित्यकारों ने गंभीरता से उकेरा है।

प्रवासी परिवारों में जहां एक ओर नई संस्कृति को अपनाने की प्रक्रिया होती है, वहीं दूसरी ओर अपने मूल्यों और परंपराओं को बनाए रखने का संघर्ष भी होता है। यह संघर्ष साहित्य में कई प्रकार की भावनात्मक, सांस्कृतिक, और सामाजिक चुनौतियों के रूप में देखा जाता है।

तकनीकी बदलाव और बदलते संबंध :–

वैश्वीकरण ने केवल आर्थिक और सामाजिक बदलाव ही नहीं लाए, बल्कि तकनीकी बदलावों ने भी पारिवारिक ढांचे को बदल दिया है। वैश्वीकरण के साथ तकनीकी प्रगति और सोशल मीडिया का परिवारिक संबंधों पर

भी गहरा प्रभाव पड़ा है। परिवार के सदस्य मोबाइल फोन, इंटरनेट, और सोशल मीडिया के आने से पारिवारिक संबंधों में संचार के नए रूप विकसित हुए हैं। परिवार के सदस्य अब डिजिटल माध्यमों से जुड़ते हैं, और व्यक्तिगत संवाद कम होता जा रहा है। यह तकनीकी बदलाव भी साहित्य में स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है, जहाँ परिवार के सदस्य एक साथ रहते हुए भी भावनात्मक रूप से दूर दिखाई देते हैं।

आज के साहित्य में यह दिखाया गया है कि कैसे सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल माध्यमों ने परिवार के सदस्यों के बीच संवाद को बदला है, साथ ही यह भी कि कैसे ये माध्यम कभी–कभी व्यक्तिगत संबंधों में दूरी का कारण भी बनते हैं। तकनीकी विकास के परिणामस्वरूप जहां एक ओर लोगों के बीच भौतिक दूरी खत्म हो रही है, वहीं भावनात्मक दूरी बढ़ने लगी है।

आधुनिक साहित्य में पारिवारिक ढांचे के भविष्य की कल्पना :–

आधुनिक साहित्य में वैश्वीकरण के प्रभाव से पारिवारिक ढांचे के भविष्य की भी कल्पना की गई है। इस संदर्भ में, कई साहित्यिक कृतियों में यह दर्शाया गया है कि भविष्य में पारिवारिक संरचना और अधिक लचीली और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आधारित होगी। इसका अर्थ यह है कि परिवार के भीतर संबंधों की प्रकृति अधिक समतामूलक और व्यक्तिगत इच्छाओं के आधार पर तय होगी।

कुछ लेखकों ने भविष्य में पारिवारिक ढांचे के विघटन की संभावनाओं को भी देखा है, जहां पारंपरिक मूल्य और रिश्ते कमजोर पड़ सकते हैं। हालांकि, कुछ लेखकों ने इसे एक सकारात्मक दिशा में भी देखा है, जहां पारिवारिक ढांचा अधिक संवेदनशील, सहिष्णु, और खुलेपन पर आधारित हो सकता है।

नई मीडिया और साहित्य पर उसका प्रभाव :–

वैश्वीकरण ने नई मीडिया के माध्यम से भी परिवार पर प्रभाव डाला है। मोबाइल, सोशल मीडिया, और इंटरनेट के प्रसार से परिवार के सदस्य एक–दूसरे से संवाद करने के नए तरीके अपना रहे हैं।

साहित्य में चित्रण रू साहित्य में यह दिखाया गया है कि कैसे नई मीडिया ने परिवार के सदस्यों के बीच की दूरी को पाटने की कोशिश की है, लेकिन कई बार इसका उल्टा प्रभाव भी पड़ा है। पारिवारिक संवाद और मेल–मिलाप में कमी, तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता, और संबंधों में यांत्रिकता जैसे मुद्दों को साहित्यकारों ने प्रमुखता से उठाया है।

ग्रामीण बनाम शहरी पारिवारिक ढांचा :–

वैश्वीकरण का प्रभाव ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के पारिवारिक ढांचे पर अलग–अलग तरीके से पड़ा है। ग्रामीण समाज में अब भी पारंपरिक पारिवारिक ढांचे को बनाए रखने की कोशिश की जा रही है, जबकि शहरी समाज में एकल परिवार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का जोर बढ़ता जा रहा है।

साहित्य में चित्रण : कई साहित्यिक रचनाएं ग्रामीण और शहरी पारिवारिक ढांचे के इस द्वंद्व को चित्रित करती हैं। इस द्वंद्व में शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के कारण परिवारों के भीतर संघर्ष और असंतुलन को प्रमुख रूप से देखा जा सकता है।

निष्कर्ष :–

वैश्वीकरण के प्रभावों को देखते हुए यह स्पष्ट है कि परिवार का ढांचा केवल सामाजिक इकाई नहीं रह गया, बल्कि यह एक जीवंत संरचना है, जो समय के साथ बदलती है। साहित्य ने इस बदलते ढांचे को न केवल

अभिव्यक्त किया है, बल्कि समाज के लिए चेतना और विचार का भी स्रोत बना है।

वैश्वीकरण ने साहित्य में परिवर्तित होते पारिवारिक ढांचे का गहरा चित्रण किया है। जहां एक ओर पारंपरिक संयुक्त परिवार टूट रहे हैं और एकल परिवार का उदय हो रहा है, वहीं दूसरी ओर पारिवारिक संबंधों में भूमिकाओं और जिम्मेदारियों में भी बदलाव आया है। प्रवास, सांस्कृतिक संघर्ष, और तकनीकी प्रगति ने भी पारिवारिक ढांचे को प्रभावित किया है।

साहित्यकारों ने इस बदलाव को न केवल एक सामाजिक तथ्य के रूप में चित्रित किया है, बल्कि इसे मानवीय अनुभवों और संवेदनाओं के माध्यम से गहराई से प्रस्तुत किया है।

संदर्भ :–

1. कर्नाड, गिरीश. 'तुगलक', साहित्य अकादमी, 1970.
2. गर्ग, मृदुला. 'कटरा बी आरजु', राजकमल प्रकाशन, 2000.
3. सोबती, कृष्णा. 'जिंदगीनामा', साहित्य अकादमी, 1979.
4. भंडारी, मन्नू. 'आपका बंटी', राजकमल प्रकाशन, 1971.
5. भगत, चेतन. 'टू स्टेट्स', रूपा पब्लिकेशंस, 2009.